दो देशों के सुरीले हुनर की बानगी

मंजरी सिन्हा

एक जमाना था जब राजा, महाराजा, नवाब हमारी शास्त्रीय कलाओं को संरक्षण प्रदान करते थे और कलाकारों के प्रश्रयदाता थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकारी संरक्षण व प्रश्रय के अलावा उद्योग घरानों ने भी हमारी कलाओं और उनसे जुड़े मूल्यों का महत्त्व समझा है व उनके प्रचार-प्रसार का बीड़ा उठाया है। उनमें एक एलएनजे भीलवाड़ा उद्योग समूह भी है। 'सुर-संगम' उनका वार्षिक संगीत सम्मेलन है। इस बार कमानी सभागार में उन्होंने पहले दिन उस्ताद शफकत अली खां का गायन व उस्ताद निशात खां का सितारवादन पेश किया। दूसरी शाम की आमंत्रित कलाकार थीं गान सरस्वती किशोरी अमोनकर।

उस्ताद नजाकत अली-सलामत अली की मशहूर जोड़ी में से उस्ताद सलामत अली के सुपुत्र शफकत अली ने अपने वालिद और चचा दोनों से ही तालीम हासिल की है। श्याम चौरासी घराने से ताल्लुक रखने वाले शफकत अली को पाकिस्तान सरकार का 'प्राइड ऑफ परफॉर्मेंस अवार्ड' मिल चुका है जो कि हुनरमंद फनकारों को 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड' के तौर पर प्रदान किया जाता है।

राग यमन से शफकत अली ने अपने गायन की शुरुआत की तो औचारमयी आलाप के पहले ही वक्तव्य में तीव्र मध्यम और पंचम तक की दूरी नाप आए। शायद वे पहले फुर्ती से राग का पूरा खाका खींच लेने की फिराक में थे। बहरहाल परिचयात्मक आलाप के बाद उन्होंने झूमरा और झपताल में विलंबित और मध्यलय खयाल और तीनताल में

संगीत

निशात खां

तराना भी गाया। आकार और सरगम की तानों की तैयारी और तराने में तंत्रकारी अंग वाले झाले की रफ्तार तक चले जाने की कोशिश जिन तालियों को हासिल करने के लिए थीं वे उन्हें बारहा मिलीं। हालांकि खयाल में भी काफी कुछ ठुमरी वाला ही रंग था, पर एक ठुमरी भी उन्होंने अलग से गाई। अरशद खां ने इसराज पर और अमजद खां ने तबले पर उनकी बेहतरीन संगत की। वैसे शोभा के लिए दो लोग हारमोनियम पर भी थे, जिन्हें शायद वे अपने साथ लाए थे।

इस शाम को संगीत की रूहदारी बख्शी उस्ताद निशात खां के सुरीले सितार ने। शाम के संधिप्रकाश राग पूरिया धनाश्री में पूरी संजीदगी से आलाप, जोड़, झाला बजाते हुए उन्होंने इस राग के मर्मस्थलों को मार्मिक ढंग से रेखांकित किया। एक ही परदे पर चार-पांच सुरों की मींड खींचते हुए उन्होंने कभी अपने परदादा इमदाद खां का सुरबहार वाला रंग दिखाया, कभी दादा इनायत खां और कभी उस्ताद विलायत खां वाला खूबसूरत अंदाज।

तीनताल में मसीतखानी गत को विराम देने के बाद उन्होंने पीलू में बेहद मीठी आलाप सहित दो बंदिशें पेश कीं। साबिर खां का तबला उनके बजाए छंदों की उलट-पलट से कयामत ढाता रहा, हालांकि माइक के असहयोग के कारण अपने तबले का पूरा लुत्फ खुद उन्हें नहीं आया। निशात खां ने चूंकि आलाप जोड़ के साथ झाला बजा लिया था, अतः मुख्य राग में उन्होंने महज गत बजाकर छोड़ दिया था, उसकी कमी पीलू ने पूरी की, जहां उनके तैयार झाले के साथ साबिर खां का टनटनाता

किशोरी अमोनकर

नाधिंधिना भी लाजवाब था।

समारोह की दूसरी शाम किशोरी जी की थी और सौभाग्य से उन्होंने समय पर शुरू किया और तकरीबन तीन घंटे मन से गाया, इसलिए संगीतप्रेमी निहाल थे। पर शुद्ध नट और हंसकिंकिणी जैसे अनसुने रागों की जगह उन्हें जाने-पहचाने रागों में अधिक आनंद आता। बहरहाल इस दोरोजा जलसे ने पाकिस्तान और हिंदुस्तान के शास्त्रीय संगीत की गुणवत्ता के फर्क को रेखांकित किया और मुखर तौर पर।